[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 4131** **A**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य के उद्देश्य' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

'जातीयता के गुण' निबंध का उद्देश्य लिखिए।

2. 'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

भक्तिन और महादेवी के संबंधों के आधार पर भक्तिन के चरित्र की विशेषताएँ बताइए ।

3. 'शायद' एकांकी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए । (12)

अथवा

'वैष्णव जन' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4. 'उखड़े खम्भे' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

लक्खा बुआ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3)

(i) पुरुष : कोई भी चीज मन को उलझाती नहीं। उलझाती है, तो बस पण्च मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, घण्टे भर के लिए नहीं, घंटे भर के लिए कोई चीज मन को नहीं उलझाती.... ।

स्त्री : रोज दो-दो घण्टे तो बात करते रहते हो, और कहते हो कि.... ।

पुरुष : ... कोई चीज होल्ड नहीं करती। लगता है, कुछ होना था, नहीं हुआ। शायद कल होगा। पर वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।

स्त्री : कल तो होता है... पर बात समझ में नहीं आती। कल तो अब आने वाला है। सोकर उठने तक आ जाएगा।

(ii) मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ लिख दिया जाए, वह सबका सब साहित्य है। साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो।

(iii) राजा ने कहा, "कहा है तो उन्हें खम्भो से टाँगा ही जाएगा। थोड़ा समय लगेगा। टांगने के लिए फन्दे चाहिए। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही सब मुनाफ़ाख़ोरों को बिजली के खम्भे से टाँग दूँगा।" भीड़ में से एक आदमी बोल उठा," पर फन्दे बनाने का ठेका भी तो एक मुनाफ़ाख़ोर ने ही ले लिया है। राजा ने कहा तो क्या हुआ ? उसे उसके ही फन्दे से टाँगा जाएगा। तभी दूसरा बोल उठा," पर वह तो कह रहा था कि फाँसी पर लटकाने का ठेका भी मैं ही ले लूँगा। राजा ने जबाब दिया, नहीं ऐसा नहीं होगा। फाँसी देना निजी क्षेत्र का उद्योग अभी नहीं हुआ है।

P.T.O.

(iv) भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का सम्बन्ध है यह कहना कठिन है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से न हटा अके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी बारी से आने जाने वाले अंधेरे उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं जिसे सार्थकता देने के लिए हमें सुख दुख देते हैं उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए मेरे जीवन को घेरे हुए है।

(v) लक्खा बुआ हुचुक हुचककर रो रही थी। उनका मुँह आंसुओं से झल झला रहा था। विसनाथ ने राम कथा की करुणा का साक्षात्कार सबसे पहले लक्खा बुआ की वाणी के माध्यम से प्राप्त किया। कालिदास, भवभूति से बाद में। लक्खा बुआ पूच्छूँ टोले की नगर वधू थी। वह हंसती बोलती रहती। मुहर्रम बिस्कोहर का सबसे बड़ा उत्सव था। उन दिनों लक्खा बुआ पान की दुकान खोलती। सबसे ज़्यादा भीड़ उन्हीं की दुकान पर होती।